शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1
Vol -6
April
2024

डिजिटल तकनीक का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव : एक अध्ययन

[1]डॉ. आशीष कुलश्रेष्ठ
प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष, मास कम्युनिकेशन, एस.जी.आर.आर. यूनिवर्सिटी, देहरादून
[2]शिखा कुलश्रेष्ठ
प्रवक्ता, अर्थशास्त्र, हेरिटेज स्कूल, देहरादून

प्रस्तावना

विश्व के साथ ही भारत के शहर और गांवों तेजी से डिजीटल अर्थ व्यवस्था की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। भारतीय अर्थ व्यवस्था का वर्तमान में डिजिटल माध्यम एक हिस्सा बन गया। डिजिटल मार्केट इंटरनेट पर होने वाले लेनदेन का एक सामूहिक शब्द है। नई संचार प्रणाली के विकसित होने के बाद प्रौद्योगिकी के क्षेत्र नई क्रांति का जन्म हुआ है। इंटरनेट के आगमन के साथ ही परंपरागत अर्थ व्यवस्था लगभग ई-अर्थव्यवस्था में समाहित हो रही है। डॉन टैपकॉस्ट की पुस्तक 'डिजीटल इकोनॉमी प्रॉमिस एंड पेरिल इन द एज ऑफ नेटवर्क्ड इंटेलिजेंस' के अनुसार डिजिटल अर्थ व्यवस्था एक ऐसी अर्थ व्यवस्था है जो डिजिटल प्रौद्योगिकी पर केंद्रित है। यह निश्चित तौर पर व्यवसायिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को कवर करता है जो वेब और अन्य डिजिटल संचार प्रौद्योगिकी से जुड़ा हुआ है। इस अर्थ व्यवस्था के तीन प्रमुख रूप है –

ई-बिजनेस
ई- बिजनेस इंफ्रास्ट्रक्चर
ई-कामर्स

इंटरनेट के विस्तार के साथ ही कंपनियां उभोक्ताओं से फेसबुक, वाट्सएप, इंस्टाग्राम, ई-मेल समेत अन्य माध्यमों से संपर्क करने के साथ ही उन्हें ऑनलाइन वस्तुओं की जानकारी भी देते हैं। वस्तुओं के गुण व दोष का भी ग्राहकों की टिप्पणी का ऑनलाइन ग्राहक मूल्यांकन करते हैं और इंटरनेट के दोस्तों की मदद से बेहतर वस्तुओं की खरीदारी करते है। यही वजह भी है कि डिजिटल प्लेटफार्म का तेजी से विकास हुआ है। इंटरनेट न सिर्फ वस्तुओं की खरीदारी तक सीमित है बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, बैंकिंग, मनोरंजन का भी

यह प्रमुख साधन बनता जा रहा है। आर्थिक विकास के स्वरूप को बदलने में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी अहम भूमिका निभा रही है। इंटरनेट के विस्तार के साथ ही बाजार का स्वरूप में भी परिवर्तन आया है और इंटरनेट के आगमन से विश्वभर के देशों में आर्थिक समृद्धि के लिए एक नया मंच तैयार हुआ है।

ई-व्यवसाय का अर्थ

इंटरनेट पर विभिन्न वेब साइटों का प्रयोग करते हुए इंटरनेट के माध्यम से व्यापार संचालित करना इंटरनेट व्यवसाय या ई-कॉमर्स कहलाता है। ई-व्यवसाय उभरती हुई अवधारण है, जो इंटरनेट सिहत कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से उत्पादों, सेवाओं और सूचनाओं के क्रय-विक्रय का वर्णन करती है। ई-कॉमर्स इलेक्ट्रानिक आंकड़ा विनिमय से लेकर वाणिज्यिक कार्यकलापों के संसाधन के लिए ई-मेल का प्रयोग करती है।

डिजिटल व्यवसाय

संयुक्त राज्य अमेरीका से शुरू हुआ डिजिटल व्यवसाय का तेजी से विकास हुआ था आज विश्व में तेजी से फैल रहा है। हार्ड वेयर, तकनीकी अनुसंधान, साफ्टवेयर सेवाएं, डिजिटल संचार सभी में निवेश की संभावनाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। पिछले दशकों में इंटरनेट को बढ़ावा देने वाले व्यवसाय तेजी से बढ़ रहे हैं। डायरेक्ट सेलिंग ही नहीं बल्कि खरीदारी, वितरण, मार्केटिंग, निर्माण, बिक्री सब कुछ डिजिटल अर्थ व्यवस्था के कारण आसान हो गया है।

इंटरनेट व्यवसाय के गुण

डिजिटल व्यवसाय नकद नहीं होता बल्कि ऑनलाइन धनराशि का भुगतान करने से कर चोरी के मामलों में लगातार कमी आई है। काला धन और भ्रष्टाचार कम करने में डिजिटल व्यवसाय अहम भूमिका निभा रहा है। इससे अर्थ व्यवस्था में सुधार के साथ ही सरकार के राजस्व में वृद्धि हुई है।

इंटरनेट व्यवसाय के दोष

पूरा विश्व अब इंटरनेट पर केंद्रित होने लगा है और ऐसे में हेकर्स का खतरा हमेशा बना रहता है। प्रौद्योगिकी पर निर्भरता से मानव संसाधन पर निर्भरता घटती जा रही है और इससे रोजगार के अवसरों पर असर पड़ा है। इंटरनेट व्यवसाय बढ़ने के साथ ही मानव संसाधनों की कमी होती जा रही है।

उद्देश्य

1. ई-कॉमर्स के अर्थ को जानना
2. वाणिज्यिक कार्य कलापों की प्रक्रिया में प्रयोग किए जाने वाले सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी साधना की जानकारी
3. ई-व्यवसाय के गुण और दोष
4. इंटरनेट माध्यमों पर निर्भरता को समझना

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग करने के साथ ही व्यवसायियों व ग्राहकों से चर्चा के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया। अध्ययन पद्धति को संबंधित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया।

वैश्विक पहुंच : कई क्षेत्रों में भौतिक उपस्थिति बनाए रखने की आवश्यकता के बिना, ई-व्यवसाय व्यवसायों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने में सक्षम बनाता है।

कम लागत : किराया, उपयोगिताएँ, और कर्मचारी कुछ ऐसे ओवरहेड खर्च हैं जो ईंट और मोर्टार स्टोर की तुलना में इंटरनेट व्यवसाय चलाने से काफी कम हो सकते हैं।

चौबीसों घंटे उपलब्धता : चूंकि ऑनलाइन खुदरा विक्रेता लगातार खुले रहते हैं, ग्राहक जब चाहें खरीदारी कर सकते हैं, जिससे बिक्री बढ़ जाती है।

सुविधा : ग्राहकों को घर पर या यात्रा के दौरान खरीदारी करने की अनुमति देकर खरीदारी प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बनाया गया है।

लक्षित विपणन : विशिष्ट जनसांख्यिकी को लक्षित करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके, ई-व्यवसाय ऐसे विपणन अभियान बना सकते हैं जो अधिक सफल हों।

स्केलेबिलिटी : बड़े भौतिक बुनियादी ढांचे के बिना, ई-व्यवसाय विकास को पूरा करने के लिए आसानी से अपने परिचालन का विस्तार कर सकते हैं।

दोष

सुरक्षा मुद्दे : साइबर हमलों और डेटा उल्लंघनों से संवेदनशील ग्राहक जानकारी से समझौता किया जा सकता है, जो अक्सर ई-व्यवसायों को लक्षित करते हैं।

डिजिटल विभाजन : संभावित उपभोक्ता आधार सीमित है क्योंकि हर किसी के पास इंटरनेट तक पहुंच नहीं है या वह ऑनलाइन व्यवसाय करने में सहज महसूस नहीं करता है।

व्यक्तिगत संपर्क का अभाव : ऑनलाइन लेनदेन में व्यक्तिगत संपर्क का अभाव होता है जो ग्राहक की वफादारी और संतुष्टि को प्रभावित कर सकता है।

शिपिंग शुल्क और समय : हालांकि ऑनलाइन उद्यम दुनिया भर के ग्राहकों तक पहुंच सकते हैं, लेकिन शिपिंग शुल्क और डिलीवरी में देरी अप्रभावी हो सकती है, खासकर उन लोगों के लिए जो विदेश में रहते हैं।

तीव्र प्रतिस्पर्धा : चूंकि ई-व्यवसायों में प्रवेश बाधा कम है, इसलिए उद्योगों की एक विस्तृत श्रृंखला में भयंकर प्रतिस्पर्धा है।

प्रौद्योगिकी निर्भरता : क्योंकि ई-व्यवसाय प्रौद्योगिकी पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं, सर्वर या इंटरनेट एक्सेस की कोई भी समस्या संचालन में बड़ी रुकावट और वित्तीय नुकसान का कारण बन सकती है।

ये फायदे और नुकसान ऑनलाइन व्यापार करने के फायदे और कठिनाइयों को दर्शाते हैं।

संदर्भ सूची

1. The Next Revlution. A Survey Of Government and Internet] The Economist. 24 June 2000.
2. Saith, Aswini and M. VijsyaBasksr 2005
3. Baxkus, Michiel, E-Govermance in Deveolping Countries. IICD Research Brief. March 2001
4. Bellany, Christin and John, A Taylor 1998, Governing in The Information Age, Buckingham Open University Press.